पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति
प्रकाशन एवं बहुउद्देशीय संस्था
www.antrashabdshakti.com

शब्द
से संवेदना तक...
लेखन से
परिवर्तन तक...

हिन्दी
हमारी पहचान
हमारी शक्ति

'समसामयिक प्रश्नों पर आपकी कलम'

(लेख प्रतियोगिता)

विचार...
चिंतन...
संवाद...
और
एक बेहतर
कल की ओर...

समाज
विकास
शिक्षा
पर्यावरण
युवा
मूल्य
राजनीति
महिला
संस्कृति
समाधान

समाज
साहित्य
संस्कृति
विकास
नई पीढ़ी
बेहतर कल

विचारों की
स्याही से
बदलता समाज...

रचनाकार :-
मीना विवेक जैन

आयोजक:-
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी (म.प्र.)

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति

प्रकाशन एवं बहुददेशीय संस्था
www.antrashabdshakti.com

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

हिन्दी
हमारी पहचान
हमारी शक्ति

शब्द से संवेदन तक...
लेखन से परिवर्तन तक...

संपादक : डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक : Webcoodee.com
मुख्य कार्यालय : 15 नेहरू चौक, वारासिवनी,
जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331

Antrashabdshaktiprakashan

संपर्क : 9009423393
ईमेल : antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाइट : www.antrashabdshakti.com

वैधानिक सूचना

पुस्तक में प्रकाशित सभी रचनाएँ संबंधित रचनाकारों की मौलिक अभिव्यक्तियाँ हैं। प्रत्येक रचना में व्यक्त विचार, कथ्य एवं अभिमत के लिए संबंधित रचनाकार स्वयं उतरदायी हैं। रचनाओं के चयन एवं प्रकाशन का उद्देश्य साहित्यिक अभिव्यक्ति को मंच प्रदान करना एवं हिन्दी लेखन को प्रोत्साहित करना हैं।

हिन्दी
से ही है
पहचान...

विचार...
संवाद...
समाज...
और एक बैहतर कल...

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

लेख प्रतियोगिता

लेखक/लेखिका **-मीना विवेक जैन**

आज की सबसे बड़ी सामाजिक समस्या:

"चरित्र का निरंतर होता पतन"

आज की सबसे बड़ी सामाजिक समस्या: "चरित्र का निरंतर होता पतन"

चरित्र मनुष्य की सबसे बड़ी पूँजी है। कहा जाता है - धन गया तो कुछ नहीं गया, चरित्र गया तो सब कुछ गया। पर आज यह बात केवल किताबों में रह गई है। आज का सबसे बड़ा संकट चरित्र का पतन है।

चरित्र क्या है?

चरित्र वह है जो हम तब करते हैं जब कोई देख नहीं रहा होता। यह बाहरी दिखावा नहीं, भीतर की शुद्धता है।

पतन क्यों हो रहा है?

1. तुरंत सफलता की चाह: बिना मेहनत के सब कुछ पाने की इच्छा ने झूठ और शॉर्टकट को जायज बना दिया है।
2. मैं और मेरा: पहले लोग परिवार और समाज के लिए जीते थे, आज केवल स्वार्थ बचा है।
3. गलत आदर्श: अब आदर्श राम-कृष्ण नहीं, बल्कि पैसे वाले लोग हैं, चाहे पैसा कैसे भी आया हो।
4. दिखावे की होड़: हम अच्छे होने से ज्यादा, अच्छे दिखने में लगे हैं।

रूप और परिणाम:

रिश्तों में स्वार्थ, व्यापार में मिलावट, शिक्षा में नकल - हर जगह हम चरित्र की परीक्षा में फेल हो रहे हैं और दुख की बात है कि हमें शर्म भी नहीं आती। चरित्रहीन समाज बाहर से समृद्ध दिख सकता है, पर अंदर से सड़ा हुआ होता है।

समाधान क्या है?

1. रोज 10 मिनट आत्म-मंथन करें - आज मैंने मूल्यों से कहाँ समझौता किया?
2. छोटी ईमानदारी से शुरू करें - कतार में रहना, सच बोलना।
3. अच्छी संगत चुनें - जैसी संगत, वैसी रंगत।
4. बच्चों को मार्क्स नहीं, मूल्य सिखाएं।

चरित्र का पतन धीरे-धीरे होता है, जैसे बूंद-बूंद से चट्टान घिसती है, और निर्माण भी वैसे ही होता है। इतिहास धनवानों को भूल जाता है, पर चरित्रवान को सदियों याद रखता है।

- मीना विवेक जैन
वारासिवनी (म.प्र.)

अन्तरा शब्दशक्ति
प्रकाशन

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

सम्मान-पत्र

यह प्रमाणित किया जाता है कि

आ.....**मीना विवेक जैन**.....जी

ने हिन्दी पखवाड़े के अवसर पर आयोजित "**एक लेख प्रतियोगिता**" में उत्साहपूर्वक सहभागिता करते हुए **समसामयिक विषय पर अपने विचारों को** प्रभावी एवं सार्थक ढंग से अभिव्यक्त किया।

उनकी साहित्यिक **अभिव्यक्ति** एवं रचनात्मक सहभागिता की सराहना करते हुए **अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन** की ओर से यह **सम्मान-पत्र** सादर प्रदान किया जाता है।

आपकी सृजनशीलता एवं साहित्यिक यात्रा के उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएँ।

हिन्दी विचारों को विस्तार देती है... समाज को जोड़ती है...

हिंदी
हमारी पहचान...
हमारी शक्ति...

प्रीति सुराना
समकित सुराना

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन एवं संस्था
डॉ. प्रीति समकित सुराना

शब्द से संवेदन तक... लेखन से परिवर्तन तक...